मिशन शिक्षण संवाद

काव्यरूप हिन्दी

कलरव

बेसिक काव्य सृजन

3

निर्माणकर्ता

जितेन्द्र कुमार (स०अ०)

प्रा० वि० धनौरा सिल्वर नगर-1

वि० क्षे० व जनपद- बागपत

पाठ-1, प्रार्थना

देश की मिट्टी, देश के जल को,
देश की हवा और देश के फल को,
रसीला बना दो प्रभु इन सबको।

देश के घर, देश के घाट को,
देश के वन और देश के बाट को,
आसान बना दो प्रभु इन सबको।

देश के तन और देश के मन को,
देश के घर के भाई-बहन को,
निर्मल बना दो प्रभु इन सबको।

पाठ-2, मुर्गा और लोमड़ी

पेड़ की डाल पर बैठे मुर्गे से,
नीचे आओ, लोमड़ी ने बोला।
खूँखार जानवरों के डर से,
यहाँ बैठा हुआ हूँ मुर्गा बोला।।

सभी पशु-पक्षियों में हुआ समझौता,
यह आज का ताजा समाचार है।
अब कोई किसी पर हमला न करेगा,
लोमड़ी बोली सबको आपस में प्यार है।।

दूर तक देखते हुए मुर्गा बोला,
यह तो सबसे अच्छा समाचार है।
लोमड़ी ने कहा क्या देख रहे हो?
कुछ कुत्ते इधर आते खूँखार हैं।।

घबराकर लोमड़ी ने कहा,
क्षमा करना अब मैं चलती।
पशु-पक्षियों में हुआ समझौता,
मुर्गे ने कहा तुम क्यों डरती?

लोमड़ी बोली सच है यह,
जो कुछ मैंने तुमसे कहा है।
लेकिन लगता है कुत्तों ने अभी,
यह समाचार नहीं सुना है।।

पाठ-3, बादल किसके काका

कुछ देर पहले थी धूप खिली,
बरसने लगा अब कहाँ से पानी।
किसने फोड़ दिये बादल के घड़े,
किसने की है ऐसी शैतानी।।

सूरज ने क्यों है बन्द कर लिया,
देखो अपने घर का दरवाजा,
बुला लिया क्या उसकी माँ ने,
कहकर उसको इधर आ जा।।

जोर-जोर से हैं गरज रहे,
ये बादल हैं किसके काका।
न जाने किसको हैं डाँट रहे,
किसने कहना न सुना माँ का।।

बेसिक काव्य सृजन

पाठ-4, तालाब में चाँद

बन्दरों ने देखा तालाब में,
चमकते हुए चाँद को।
उसे पकड़ने की उन्हें सूझी,
सोचा चलो पकड़ें चाँद को।।

एक बन्दर चाँद को,
पकड़ने को कूद गया।
पर चाँद हाथ नहीं आया,
अरे कहाँ गायब हो गया।।

लगता है मेरे कूदने से,
यह चाँद है डर गया।
फिर एक योजना बनायी,
और यह विचार किया।।

एक-दूसरे का हाथ पकड़,
पेड़ से नीचे लटकते हैं।
और फिर धीरे से जाकर,
चाँद को हम पकड़ते हैं।।

अचानक डाल टूटी और,
बन्दर के हाथ छूट गए।
सारे बन्दर मगरमच्छ की,
पीठ पर तब गिर गए।।

भागो रे! एक बन्दर बोला,
फिर उनसे बोला मगर।
डरो मत मेरी पूँछ पकड़ो।
बन्दर बोले मगर, अगर।।

पाठ-5, साहसी सीमा

भाग-1

एक रात अकेले थे सीमा और,
उसका छोटा भाई घर पर।
उसके माता-पिता दीदी के घर,
गये थे तीज का सामान लेकर।।

अचानक शोर सुन सीमा उठी,
बाहर हल्ला हो रहा था।
भागो-भागो, बचाओ-बचाओ,
बाढ़ आ गयी है, शोर मचा था।।

सीमा ने जैसे ही उठकर,
खोला दरवाजा दौड़कर।
बरामदे में तेजी से पानी,
बढ़ रहा था दंग हुई देखकर।।

वह भागकर कमरे में लौटी,
और जगाया छोटे भाई को।
दोनों मिलकर ऊँची जगह पर,
रखने लगे घर के सामान को।।

देखते ही देखते बाहर का पानी,
तेजी से कमरों में भरने लगा।
सीमा बरामदे में आ पहुँची,
वह डूब जाएगी उसे लगने लगा।।

अपने भाई को छत पर चढ़ाया,
उसने तुरन्त सीढ़ी लगाकर।
वह स्वयं भी तेजी से सीढ़ी,
पकड़ चढ़ गयी छत के ऊपर।।

पाठ-5, साहसी सीमा

भाग-2

उसने माता-पिता को फोन किया,
पर उनसे बात न हो सकी।
सीमा अपने छोटे भाई के साथ,
रातभर छत पर बैठी रही।।

बार-बार अपने छोटे भाई को,
वह ढाँढस बंधाती रही थी।
दूर तक पानी ही पानी था,
सबको अपनी जान की पड़ी थी।।

सुबह हुई सीमा व उसका भाई,
छत पर बैठे देख रहे चारों ओर।
सीमा ने पड़ौसी रहीम चाचा को,
बुलाया आवाज़ देकर पुरजोर।।

रहीम चाचा ने किसी तरह अपनी,
छत पर चढ़ाए सीमा और उसका भाई।
दोपहर को बचाव कार्य के लिए,
दो नाव और एक मोटरबोट आयी।।

एक नाव में केवल पन्द्रह,
लोग ही उस समय बैठ पाये।
सीमा और उसका भाई उसी,
नाव ने सुरक्षित जगह पहुँचाये।।

अब तक उनके माता-पिता भी,
वहाँ पहुँच चुके थे चलकर।
वे दोनों बहुत ही खुश हुए,
अपने बच्चों से मिलकर।।

पाठ-6, सबसे पहले

आज जगा मैं सबसे पहले,
सुनने को चिड़िया का चहकना।
पंख फैलाकर फर-फर उड़ना।
देखने को पूरब में फैले,
बादल पीले, लाल, सुनहले।

पौधों की डाली पर खिले जो,
सुन्दर-सुन्दर फूल चुनूँगा।
पूरब में फैले देखूँगा,
बादल पीले, लाल, सुनहले।
आज जगा मैं सबसे पहले।

आज कहूँगा मैं तो सबसे,
कैसे पहला पत्ता डोला,
कैसे पहला पंछी बोला।
कैसे पूरब ने फैलाए,
बदल पीले, लाल, सुनहले।

पाठ-7, इसमें क्या शक है?

राजा के पास एक आदमी आया,
साथ अपने एक तोता लाया।
तोता है ये बड़ा होशियार,
कहकर राजा को दिखलाया।।

आपसे बात ये कर सकता है,
जो बोलो समझ सकता है।
राजा ने फिर तोते को देखा,
यकीन नहीं उसको था आया।।

राजा ने पूछा क्या ये सच है?
तोता बोला इसमें क्या शक है?
सुन आश्चर्य हुआ राजा को,
तोते को महल ले आया।।

एक दिन तोते से उसने पूछा,
क्या मैं हूँ एक राजा अच्छा?
वह बोला इसमें क्या शक है?
तोते ने वाक्य वही दौहराया।।

क्या प्रजा प्रेम मुझे करती है?
अथवा फिर मुझसे डरती है।
वह बोला इसमें क्या शक है?
तोते ने फिर यही सुनाया।।

क्या कोई शत्रु है मेरा?
मुझे चाहिए उत्तर तेरा,
वह बोला इसमें क्या शक है?
राजा ने वही उत्तर पाया।।

यदि उसका नाम बताओगे,
तो प्रेम हमारा पाओगे।
वह बोला इसमें क्या शक है?
वही उत्तर मिला रटा-रटाया।।

एक ही रट्टा तुमने है लगाया,
मैं बेवकूफ था तुमको ले आया।
वह बोला इसमें क्या शक है?
राजा फिर बड़ा पछताया।।

बेसिक काव्य सृजन

पाठ-8, अगर पेड़ भी चलते होते

बच्चों पेड़ यदि ये चलते,
कितने मजे हम सबके होते।
उनके तने में बाँध के रस्सी,
जहाँ चाहे उन्हें ले जाते।।

कड़ी धूप जो हमें सताती,
छाँव में उनकी हम छुप जाते।
लगती भूख यदि अचानक,
मीठे फल उनके हम खाते।।

कीचड़, बाढ़ अगर आ जाती,
उनके ऊपर हम झट चढ़ जाते।

मिशन शिक्षण संवाद
बेसिक काव्य सृजन

पाठ-9, वाराणसी की यात्रा

भाग-1

गर्मी की छुट्टियों में मैं दीदी संग,
बुआ से मिलने वाराणसी गया।
रेलगाड़ी से वहाँ जाना पड़ता है,
पूरे बावन रुपये का टिकट लगा।।

रेलगाड़ी से यात्रा करने में,
मुझे बड़ा आनन्द आया।
छुक-छुक, धड़-धड़ाम शूं..,
का शोर गाड़ी ने मचाया।।

साथ हमारे पेड़ भी चल रहे,
ऐसा हमको आभास हुआ।
स्टेशन पहुँचे तो हमने देखा,
प्लेटफार्म भीड़ से भरा हुआ।।

बाहर आकर दीदी ने फिर,
रिक्शा किया और चल दिए।
थोड़ी देर में ही हम दोनों,
बुआ के घर पर पहुँच गए।।

दरवाजे पर खड़ी बुआ ने,
हमें खुशी से गले लगाया।
फुफेरी बहन शैली व भाई,
राजू को देखकर मन हर्षाया।।

शैली, राजू और बुआ ने घर के,
सब लोगों के बारे में पूछ लिया।
एक बड़ा सा रसगुल्ला फिर,
खाने को बुआ ने मुझे दिया।।

इतना बड़ा रसगुल्ला मैं तो,
एक बार में ही खा गया।
मेरा पूरा मुँह रसगुल्ले के,
रस से लबालब भर गया।।

सुबह होकर तैयार हम सब,
गदौलिया फिर घूमने गये।
मेले जैसी चहल-पहल थी,
ऊँचे मन्दिर आसमान छू रहे।।

पाठ-9, वाराणसी की यात्रा
भाग-2

घण्टे-घड़ियालों की आवाज़ें,
आ रहीं थीं टन-टन, टन-टन।
विश्वनाथ मन्दिर में आरती सुन,
प्रसन्न हुआ हम सबका मन।।

फूल और प्रसाद लेकर सब,
लोग मन्दिर जा रहे भीड़ में।
मैं भी फूल लेकर मन्दिर गया,
समय बहुत लगा घनी भीड़ में।।

मन्दिर के बाहर एक आदमी,
बजा रहा था मधुर शहनाई।
उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ भी,
वाराणसी के थे दीदी ने बतायी।।

इसके बाद हम दशाश्वमेध घाट,
गये और नाव में बैठे होले-होले।
इतनी बड़ी नाव जब चल रही,
खा रही थी वह बड़े हिचकोले।।

नाविक छप-छपाक करके,
अपना चप्पू चला रहा था।
गंगा किनारे कई घाट बने थे,
दृश्य देख आनन्द आ रहा था।।

बड़ी-बड़ी छतरियाँ लगी थीं,
बहुत सारी थीं सीढियाँ वहाँ।
उनपर बैठे लोग नहा रहे थे,
एक मन्दिर लगे जैसे अब गिरा।।

यह टेढ़ा मन्दिर है देखो मोनू!
दीदी ने फिर हमको बतलाया।
कैसे रुका हुआ होगा यह मन्दिर,
अचम्भित हो मैं सोच में गहराया।।

दोपहर को हम सब गये घूमने,
बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय।
महामना मदन मोहन मालवीय ने,
बनवाया यह बहुत बड़ा विद्यालय।।

पाठ-9, वाराणसी की यात्रा
भाग-3

यहाँ देश-विदेश से लोग पढ़ने,
आते हैं दीदी ने हमें बतलाया।
अपने साथ ले जाकर मुझको,
संकटमोचन मन्दिर दिखलाया।।

भूख लगी तो दीदी ने मुझको,
लस्सी संग जलेबी खिलायी।
कुछ लोग खा रहे बाटी-चौखा,
सत्तू के ठेले पर थी भीड़ आयी।।

अगले दिन हम सारनाथ गये,
वहाँ एक बड़ी इमारत देखी।
बड़ी-बड़ी मूर्तियाँ और बहुत,
सी पुरानी वस्तुएँ थी वहाँ रखी।।

देखो इसे कहते हैं संग्रहालय,
अशोक की लाट है रखी यहीं।
जिसके ऊपर चार सिंह बने हैं,
दीदी ने हमसे यह बात कही।।

हमारे देश का राज चिह्न भी,
उसी लाट से ही लिया गया है।
बौद्ध मन्दिर और स्तूप भी देखे,
जिन्हें बहुत सुन्दर बनाया गया है।।

लौटते समय रेलगाड़ी का इंजन,
बनाने का कारखाना भी देखा।
शाम को बाजार घूमने निकले,
रात होने तक लहराबीर देखा।।

घर वापस लौटकर रात में,
शैली, राजू से बहुत बातें हुई।
सुबह लौटना था हमें वापस,
वाराणसी की सैर से खुशी हुई।।

गले लगाते हुए बुआ ने हमें फिर,
अगली छुट्टियों में आने को कहा।
शैली और राजू ने हमको बहुत,
दूर तक जाते हुए मुड़कर देखा।।

पाठ-10, बन्दर बाँट

भाग-1

काली बिल्ली ने सफेद,
बिल्ली को अभिवादन किया।
क्यों उदास लग रही हो,
कहकर हालचाल पूछ लिया।।

भूखी हूँ कुछ खाने को,
ढूँढ रही हूँ उसने जवाब दिया।
बहना मैं भी भूखी हूँ काली,
बिल्ली ने भी यही कहा।।

सफेद बिल्ली को मेज पर,
एक रोटी दिखाई पड़ी।
जी करता है लपक लूँ,
पर डर लगता है मुझे अभी।।

काली बिल्ली रोटी लेकर,
वहाँ से जब भागने लगी।
तब सफेद बिल्ली बोली,
रोटी मेरी है तू कहाँ चली।।

दोनों बिल्लियाँ रोटी पर,
अपना हक जमाने लगीं।
रोटी के लिए जोर-जोर से,
आपस में झगड़ने लगीं।।

तभी वहाँ एक बन्दर आया,
बोला तुम क्यों लड़ती बेकार?
काली बिल्ली बोली मैं रोटी पर,
झपटी इस पर है मेरा अधिकार।।

सफेद बिल्ली बोली पहले मैंने,
इसे देखा था यह रोटी मेरी है।
बन्दर बोला कोई गवाह है क्या?
जो साबित करे यह रोटी तेरी है।।

कोई गवाह नहीं है दोनों,
बिल्लियों ने उत्तर दिया।
तब बन्दर ने कुछ देर सोचा,
फिर गम्भीर हो फैसला किया।।

बेसिक काव्य सृजन

पाठ-10, बन्दर बाँट

भाग-2

कोई गवाह नहीं तो किसकी,
बात सच मानी जाए।
फैसला है कि रोटी दोनों में,
बराबर तोड़कर बाँटी जाए।।

बन्दर ने धर्मकाँटे के दोनों,
पलड़ों में रोटी के दो टुकड़े रखे।
एक टुकड़ा भारी निकला तो,
वह पलड़ा झुका हुआ दिखे।।

भारी टुकड़े में से तोड़कर,
रोटी का भाग बन्दर खा गया।
अब दूसरा पलड़ा झुक गया,
इसे भी छोटा करना होगा।।

हर बार झुके पलड़े से रोटी,
तोड़कर बन्दर खाता गया।
यह देख बिल्लियों ने सोचा,
हमारा हिस्सा तो अब गया।।

श्रीमान आप रोटी तोड़ते,
थक गये होंगे बिल्लियों ने कहा।
यह बन्दर बाँट हमें नहीं चाहिए,
बाकी बची रोटी हमें दे करो कृपा।।

नहीं-नहीं तुम फिर झगड़ोगी,
झगड़े की जड़ ही खत्म कर देता हूँ।
तुम दोनों का इससे पेट न भरेगा,
बाकी बची रोटी भी मैं खा लेता हूँ।।

रोटी तो बन्दर खा गया अब,
क्या करें काली बिल्ली ने कहा।
करना क्या है आगे से झगड़ा बन्द,
मिलजुल फैसला करेंगे सफेद बिल्ली ने कहा।।

पाठ-11, पहेलियाँ

दो आँखें हों मेरी या चार,
बिन मेरे है कोट बेकार।
आँख में धागा डाला जाए,
दर्जी के घर से उठा ले जाएँ।।

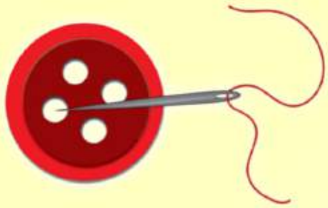

टिक-टिक की करती आवाज,
समय बताना मेरा काज।
काम समय पर जो है करता,
उसका ही चलता है राज।।

नीचे पटका ऊपर गयी,
ऊपर फेंका नीचे आयी।
मन चाहे जितना भी खेलो,
बच्चों के मन को भायी।।

हरी पूँछ की लाल बिलाई,
इसका बनता हलवा भाई।
सलाद में भी इसको काटें,
सब्जी भी इससे बन जाई।।

पंख हैं, चिड़िया नहीं है,
चलता है, बढ़ता नहीं है।
गर्मी में यह आता काम,
झट बतलाओ इसका नाम।।

पैरों में जंजीर पड़ी है,
फिर भी सरपट दौड़ी जाए।
पगडण्डी पर चले झूमती,
गाँव-गाँव तक यह पहुँचाए।।

एक लाठी अकड़कर खड़ी,
लेकिन है रस से भरी।
बने मिठाई इससे भाई,
जल्दी से दो नाम बताई।।

पाठ-12, चाँद का कुर्ता

जिद करके चाँद ने एक दिन,
अपनी माँ को यह बोला।
माँ मेरे लिए सिलवा दो,
ऊन का मोटा एक झिंगोला।।

सर्दी की तो बात सही है,
लेकिन मुझे डर है इसका।
एक नाप में मैंने कभी,
तुझको नहीं है देखा।।

सन-सन करते हुए रात भर,
ठण्डी हवा चलती है।
ठिठुर-ठिठुर कर किसी तरह,
मेरी यात्रा पूरी होती है।।

कभी एक अँगुल भर चौड़ा,
कभी होता है एक फुट मोटा।
हो जाता है बड़ा किसी दिन,
और किसी दिन होता छोटा।।

एक तो सफर है आसमान का,
ऊपर से मौसम है जाड़े का।
अगर नहीं सिलवा सको तो,
ला दो कोई कुर्ता ही भाड़े का।।

हर दिन घटता-बढ़ता रहता,
कभी तू ऐसा भी करता है।
किसी की भी आँखों को तू,
दिखलाई नहीं पड़ता है।।

सुनकर बेटे की बातें माँ ने,
कहा मेरे लाल सलौने।
भगवान तुझे सलामत रखे,
लगे न तुझे कोई जादू-टोने।।

तू ही बता अब मुझको,
किस दिन नाप तेरी लिखवाएँ।
सिये कौन झिंगोला ऐसा,
जो हर रोज बदन में आये।।

पाठ-13, सीख

भाग-1

वैभव जब स्कूल से घर लौटा,
तो माँ ने पूछा उससे मुस्काकर।
आज क्या हुआ स्कूल में तुम्हारे?
जरा बताओ हमें भी समझाकर।।

वैभव बोला आज है दो अक्टूबर,
इसलिए कार्यक्रम कराया गया।
गांधी जी और शास्त्री जी का,
जन्मदिन स्कूल में मनाया गया।।

फूल चढ़ाकर उनके चित्रों पर,
सभी ने श्रद्धांजलि की अर्पित।
दीदी ने भी कम्प्यूटर पर हमको,
दिखाया एक अच्छा सा चलचित्र।।

वैभव ने फिर अपनी माँ को,
सुनायी उनकी एक कहानी।
जिसको माँ ने बड़े ध्यान से,
सुना अपने बेटे की जुबानी।।

एक बार कस्तूरबा हुई बहुत बीमार,
दवा से भी उन्हें आराम नहीं मिला था।
बीमारी में नमक न लेना होता फायदेमन्द,
गांधी जी ने किसी पुस्तक में पढा था।।

उन्होंने कस्तूरबा से कुछ दिन,
भोजन में नमक न लेने को कहा।
यह तो बड़ा कठिन कार्य है,
कस्तूरबा ने गांधी जी से कहा।।

पाठ-13, सीख

भाग-2

नमक छोड़ने को यदि कोई,
आपसे कहे तो न छोड़ पाएँगे।
गांधी जी ने सोचा इस दुनिया में,
पर उपदेश कुशल बहुतेरे मिल जाएँगे।।

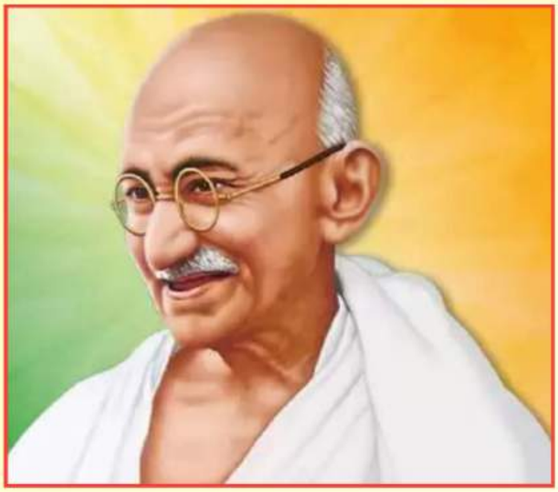

जो बात दूसरों से करने को कहें,
पहले उसको स्वयं चाहिए करना।
तभी उसका प्रभाव है होता,
अन्यथा व्यर्थ है उसको कहना।।

वैद्य यदि बीमारी में मुझसे कभी,
कोई चीज छोड़ने को बोले।
तो मैं अवश्य छोड़ दूँगा उसको,
इसी में भला है गांधी जी बोले।।

मैंने तुमसे नमक छोड़ने को,
कहा है तब मैं यह सोचता हूँ।
क्यों न पहले मैं ही कुछ दिन,
नमक छोड़कर देखता हूँ।।

कस्तूरबा पर बहुत प्रभाव,
पड़ा गांधी जी की बात का।
उन्होंने भोजन में नमक बन्द किया,
तो शीघ्र लाभ हुआ स्वास्थ्य का।।

वैभव की सुन कहानी माँ बोली,
ऐसे ही थे महात्मा गांधी और शास्त्री जी।
वे जो कहते पहले स्वयं करते थे,
तभी तो देश को याद उनकी है आती।।

पाठ-14, माथापच्ची

आओ बच्चों हम सब मिलकर,
थोड़ी सी मस्ती करते हैं।
खेल-खेल में शब्द बनाने की,
कुछ माथापच्ची करते हैं।।

इस वर्ग पहेली में बहुत सी,
चीजों के नाम छिपे हैं।
इनको जो ढूँढे पहचानकर,
वो बच्चे होशियार बड़े हैं।।

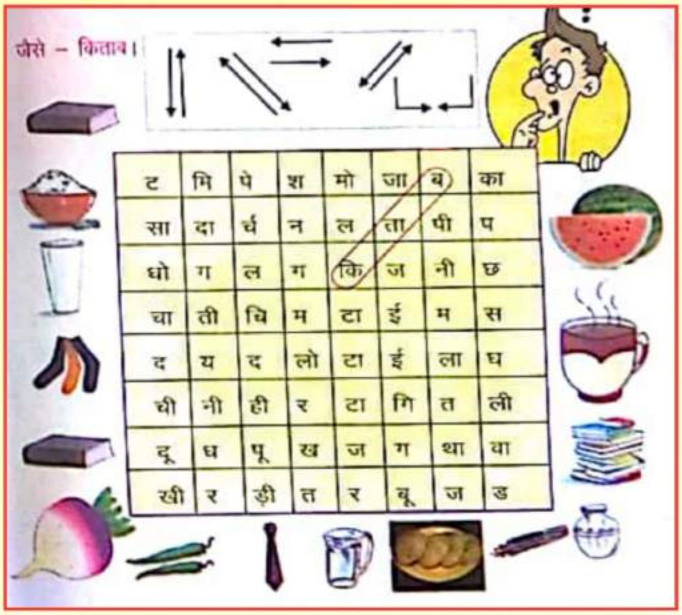

इनमें कम से कम 6 बर्तन,
12 खाने-पीने की चीजें हैं।
3 पढ़ने-लिखने की वस्तुएँ,
और 2 पहनने वाली चीजें हैं।।

तुम सीधी या आड़ी-तिरछी,
रेखाओं से इन्हें मिलाओ।
ढूँढो और कॉपी में लिखो,
बच्चों बुद्धिमान कहलाओ।।

पाठ-15, जड़ और फूल

गुलमोहर का एक पेड़ था,
बड़ा ही सुन्दर-सा दिखता।
जब लाल फूलों के गुच्छे लगते,
वह गुलदस्ता जैसा लगता।।

एक बार फूलों को सूझी शैतानी,
उन्होंने पेड़ की जड़ को बदसूरत कहा।
उसकी खूब हँसी उड़ायी लेकिन,
जड़ चुप ही रही उसने कुछ न कहा।।

बरसात आयी बादल जोर से गरजे,
और फिर जोर से चमकी बिजली।
आकाश से आग की लपट झपटी,
गुलमोहर के पेड़ पर गिरी बिजली।।

बिजली गिरने से गुलमोहर झुलसा,
और वह एकदम ठूँठ सा हो गया।
बरसात बीती, जाड़ा गया और,
फिर मनभावन बसन्त आ गया।।

फिर हुआ एक अजब चमत्कार,
उसी गुलमोहर के ठूँठ पर कोंपलें आयी।
शाखाओं पर नये पत्ते निकले और,
पेड़ पर फिर से हरियाली छायी।।

फिर कलियाँ बनीं और कलियों से,
लाल फूल बन खिल गये अति सुन्दर।
जड़ ने फूलों से पूछा कहो भाई,
फूल! तुम कैसे हो बोलो हँसकर?

नये फूल समझते थे कि जड़ की सेवा,
और मेहनत से ही पेड़ फिर से पनप आया है।
फूलों ने सिर आदर से झुकाकर कहा आप सचमुच,
खूबसूरत हो आपके कारण ही हमने जीवन पाया है।।

पाठ-16, घुमक्कड़ तारक

भाग-1

एक तालाब किनारे पन्ना और पंखी,
नाम के हंसों का जोड़ा रहता था।
उसी तालाब में तारक नामक उनका,
मित्र एक कछुआ भी रहता था।।

हंस तो दूर-दूर तक उड़कर चक्कर,
लगा आते उन्होंने संसार देखा था।
लेकिन कछुआ उस तालाब के,
आगे कभी कहीं भी नहीं गया था।।

हंस उसे रोज नयी-नयी बातें,
सुनाया करते थे दिलचस्प बड़ी।
इससे तारक के मन में भी यह,
संसार देखने की उत्सुकता बढ़ी।।

एक दिन तारक ने हंसों से कहा,
उसे भी संसार घुमाने ले चलें।
हंस हो गये तैयार और उसको,
साथ लेकर आकाश में उड़ चले।।

तारक को दूर तक फैला हुआ,
आकाश और समुद्र अच्छा लगा।
अचानक उसने समुद्र में पानी की,
ऊँची-ऊँची लहरों को उठते देखा।।

खुश होकर वह हँस पड़ा और मुँह,
खुलते ही गहरे समुद्र में जा गिरा।
तारक हुआ चकित देखकर कि वह,
एक दूसरे ही संसार में आ गया।।

यहाँ तो चारों ओर पानी ही पानी था,
जिसमे हजारों पौधे, कीड़े-मकोड़े थे।
वह जहाँ भी जाता उसे तरह-तरह के,
जीव-जन्तु वहाँ दिखाई देते थे।।

अचानक उसे बहुत बड़ा कछुआ दिखा,
जो उसे बहुत ध्यान से देख रहा था।
अरे भाई! तुम कहाँ से आये हो?
तुम्हारा नाम क्या है उसने पूछा था?

वह बोला मेरा नाम तारक है,
मैं पूरे देश की सैर करने आया हूँ।
लेकिन आपका नाम क्या है?
ये अभी तक नहीं जान पाया हूँ।।

मुझे हीरक कहते हैं मैं तुमको,
अपने समुद्र की सैर कराता हूँ।
मेरे साथ चलो यहाँ क्या-क्या है?
तुमको सबकुछ दिखलाता हूँ।।

इसे देखो तारक यह ह्वेल है,
हाथी से कई गुना बड़ी होती है।
यह नहीं है कोई थलचर प्राणी,
यह तो एक मछली होती है।।

अचानक एक ओर उछलती-कूदती,
मछलियों का झुण्ड आता दिखा।
तारक ने अचरज से पूछा ये क्या है?
ये डॉल्फिन मछलियाँ हैं हीरक ने कहा।।

पाठ-16, घुमक्कड़ तारक

भाग-2

इन्हें बातूनी मछलियाँ भी कहते,
ये बहुत उछलकूद करती रहती हैं।
अपने हैरतअंगेज करतब से,
लोगों का मनोरंजन भी करती हैं।।

इन्होंने कई बार समुद्र में डूबते,
बहुत से लोगों को भी है बचाया।
तारक यह सुनकर अचम्भित हुआ,
और उसे बड़ा ही आनन्द आया।।

हीरक मुस्काकर बोला समुद्र में,
और भी हैं बहुत से अद्भुत प्राणी।
दोनों मूंगे की एक चट्टान पर जा बैठे,
विचित्र जीवों को देख हुई हैरानी।।

यहाँ से उन्होंने बड़े-बड़े घोंघे,
केकड़े, रंगीन मछलियाँ देखीं।
बहुत से झींगे और स्पंज देखे,
पाँच कोनों की सितारा मछली देखी।।

एक ओर आठ हाथों वाला,
ऑक्टोपस चला जा रहा था।
समुद्र अचरज से भरा हुआ है,
तारक ने फिर यह कहा था।।

हीरक ने उसे ऐसी मछलियाँ दिखायी,
जिनकी आँखों से रोशनी निकल रही थी।
कई मछलियों की आकृति साँप,
और घोड़े जैसी भी दिख रही थी।।

अचरज भरा समुद्र देखकर,
तारक वहीं रहने को कहने लगा।
हीरक बोला तुम खुशी से यहाँ रहो,
तारक फिर समुद्र में ही रहने लगा।।

पाठ-17, लोकगीत

हमारे गाँव और घरों में,
बहुत से अवसर ऐसे आते।
जिन पर अधिकतर समूह में,
कई तरह के गीत गाये जाते।।

ब्रजभाषा

आज बिरज मे होरी रे रसिया।
होरी रे रसिया, बरजोरी रे रसिया।।
उड़त गुलाल लाल भए बादर।
केसर रंग मे घोरी रे रसिया।।
बाजत ताल, मृदंग, झाँझ, ढप।
और मगारे की जोरी रे रसिया।।

भोजपुरी

सुंदर सुभूमि भइया भारत के देसवा से।
मोरे प्रान बसे हिम-खोह रे बटोहिया,
एक द्वार घेरे रामा हिम-कोतवलवा से,
तीन द्वार सिंधु घहरावे रे बटोहिया।

इन गीतों को गाते समय,
कोई बाजा भी हैं बजाते।
ये हमारी बोली के गीत हैं,
ये गीत लोकगीत कहलाते।।

अवधी

बाबा निमिया क पेड़ जिनि काटेउ
निमिया चिरइया के बसेर,
बलइया लेऊँ बीरन की।
हो मोरे बाबा।
बाबा सगरी चिरइया उड़ि जइहै
रहि जइहैं निमिया अकेर,
बलइया लेऊँ बीरन की।
हो मोरे बाबा।

बुन्देली

देखो सखी वर्षा ऋतु आई।
बागन मोर, कोकिला बोलत,
चातक, दादुर शोर मचाई।
घुमड़-घुमड़ गरजत घन तड़कत,
काली घटा नभ देत दिखाई।।

रविन्द्र की कक्षा में शिक्षक ने,
मोबाइल पर ये गीत सुनाये।
जिन्हें सुनकर कक्षा के सभी,
बच्चे आनन्द से बहुत हर्षाये।।

पाठ-18, पत्र

प्रिय वहीदा, यहाँ आए,
मुझे पाँच दिन हो गए।
रोज कहीं न कहीं घूमने जाते हैं,
आज भी थे हम कहीं गए।।

वहाँ तो ठण्ड होगी लेकिन,
यहाँ गर्मी है अभी तक ज्यादा।
यहाँ के लोग आपस में बोलें तो,
मुझे कुछ समझ नहीं आता।।

मजे की बात यहाँ समोसे भी,
लोग चावल के आटे से बनाए हैं।
यहाँ मैंने इडली, डोसा, साम्भर,
और उपमा भी खूब खाए हैं।।

यहाँ घर-घर मे नारियल,
और केले के पेड़ लगे हैं।
यहाँ आदमी कमीज और,
सफेद लुँगी पहनते हैं।।

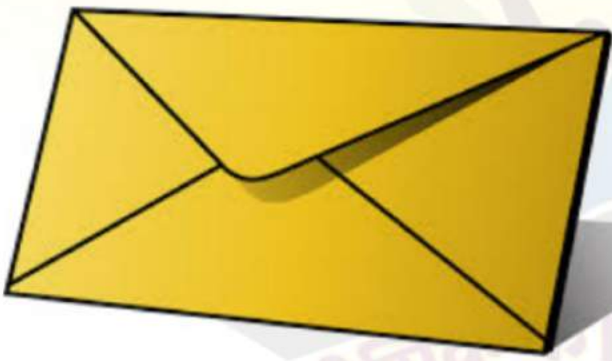

लड़कियाँ बालों में फूलों का,
गजरा (वेणी) लगाती हैं।
उनके पहनावे की सुन्दरता,
मन को बहुत लुभाती है।।

समुद्र देखकर दंग रह गयी,
इतना पानी, इतना पानी!
ऊँची-ऊँची पानी की लहरें,
देख आनन्द आया, हुई हैरानी।।

एक बात कहूँ हमने यहाँ का,
एक अजूबा साँपघर भी देखा।
इन पाँच दिनों में तमिल भाषा के,
कुछ शब्दों को भी सीखा।।

बात इतनी है कि मैं अभी,
सबकुछ न लिख पा रही।
बाकी बातें आकर बताऊँगी,
कुछ चित्र यहाँ के भेज रही।।

तुम्हारी, सरोज

पाठ-19, सुभाष चन्द्र बोस

कुछ वर्ष पहले हमारे देश पर,
क्रूर अंग्रेजी सत्ता का राज था।
जगह-जगह उनके शासन के,
विरोध का हो रहा आगाज था।।

अनेक लोगों ने भारत को,
स्वतन्त्र कराने को संघर्ष किया।
सुभाष भी उनमें एक थे जिन्होंने,
अपना जीवन बलिदान किया।।

23 जनवरी 1897 को कटक में,
सुभाष चन्द्र बोस का जन्म हुआ।
यह स्थान उड़ीसा राज्य में है,
सरकारी वकील थे उनके पिता।।

5 वर्ष की उम्र से उनकी,
शिक्षा का आरम्भ हुआ।
वे पढ़ने में बहुत अच्छे थे,
सदा कक्षा में प्रथम स्थान रहा।।

बी० ए० के बाद सुभाष चन्द्र बोस ने,
इंग्लैण्ड में आई० सी० एस० परीक्षा पास की।
सरकारी नौकरी के लिए यह,
उस समय की सबसे कठिन परीक्षा थी।।

भारत लौटकर उन्होंने नौकरी,
न करने का निश्चय किया।
उस समय स्वतन्त्रता के लिए,
चल रहे आन्दोलन में भाग लिया।।

सन 1938 में उन्हें भारतीय राष्ट्रीय,
कांग्रेस का अध्यक्ष चुना गया।
अप्रैल 1939 में पद से इस्तीफा देकर,
'फॉरवर्ड ब्लॉक' दल का गठन किया।।

1939 के द्वितीय विश्वयुद्ध में उन्होंने,
अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ने का पक्ष लिया।
इस पर अंग्रेजी सरकार ने उन्हें,
पकड़कर नजरबन्द कर दिया।।

उन्होंने सोचा आजादी के लिए,
देश से बाहर जा संघर्ष किया जाये।
काबुली पठान के वेश में पुलिस से,
बचकर अफगानिस्तान पहुँच पाये।।

वहाँ से जर्मनी और फिर जापान,
जापान से बर्मा आकर संघर्ष किया।
जहाँ भारतीय सैनिकों के सहयोग से बनी,
आजाद हिन्द फौज का नेतृत्व किया।।

उन्होंने 'दिल्ली चलो' और 'जय हिन्द' का,
नारा दिया और जवानों से यह कहा।
'तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा',
देशवासियों ने इन्हें 'नेताजी' नाम दिया।।

पाठ-20, भारत है मेरा घर

रानी बिटिया घूमने चली,
दिल्ली से आगे बढ़ गयी।
चलते-चलते, चलते-चलते,
वह चण्डीगढ़ पहुँच गयी।।

चण्डीगढ़ से पहुँची जयपुर,
वहाँ से वह पहुँची रामेश्वर।
रामेश्वर से चलते-चलते,
लौट आयी वह अपने घर।।

माँ ने पूछा रानी बिटिया,
तुम बाहर कहाँ गयी थी?
बिटिया बोली कहीं नहीं,
मैं घर के अन्दर यहीं थी।।

घर के अन्दर? रानी बिटिया,
न बोलो झूठ सरासर।
झूठ नहीं माँ सच कहती हूँ,
भारत है मेरा घर।।

पाठ-21, घमण्डी का बाग

स्कूल से लौटकर कुछ बच्चे,
घमण्डी के बाग में खेलते।
पेड़ की टहनियों पर चिड़ियाँ गातीं,
खेल रोककर बच्चे उन्हें सुनते।।

एक दिन उन्हें घमण्डी ने ड़ाँटा,
तुम सब यहाँ क्या करने आये?
सुनकर सारे बच्चे ड़र गये,
बाग से भाग अपने घर आये।।

उसने बाग के चारों ओर,
ऊँची चहारदीवारी को बनवाया।
एक बोर्ड बाग के बाहर टाँग दिया,
'बाग में आना सख्त मना' लिखवाया।।

बसन्त आया फूल खिले,
नन्हीं चिड़ियाँ चहकने लगीं।
पलंग पर लेटे घमण्डी ने देखा,
बच्चों की टोली बाग में घुसने लगी।।

कुछ पेड़ की ड़ाली पर चढ़ गये,
फूल-पत्तियाँ भी खुश लगने लगीं।
एक छोटा बच्चा कूद-कूद हारा,
उसे ड़ालियाँ हाथ नहीं थीं लगी।।

यह देख घमण्डी का मन बदला,
बच्चे के पास झुक मुस्कुरा दिया।
बच्चे ने हँस गले में बाँहें ड़ालीं,
मन बदला उसने भाँप लिया।।

गोदी में लेकर घमण्डी ने,
बच्चे को ड़ाली पर बैठा दिया।
बच्चे खुश थे यह देख घमण्डी ने,
'बाग भी तुम्हारा है' कह ही दिया।।

अब छुट्टी के बाद बच्चे रोज जाते,
बाग में ही मिलकर खेलने लगे।
सुन्दर फूलों के संग घमण्डी बच्चों को भी,
प्यार से 'सुन्दर फूल' कहने लगे।।